



॥ श्री पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी
व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत कथा ॥

पौष मास के शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इसे अनेक स्थानों पर पवित्रा एकादशी भी कहा जाता है। इस एकादशी का माहात्म्य भविष्योत्तर पुराण में वर्णित है। यह व्रत संतान-सुख, परिवार की समृद्धि, पितृ-कल्याण तथा समस्त पापों के नाश के लिए अत्यंत फलदायी माना गया है।

नोट: वर्ष में दो पुत्रदा एकादशी आती हैं—एक श्रावण शुक्ल पक्ष में और दूसरी पौष शुक्ल पक्ष में। पौष शुक्ल की पुत्रदा एकादशी को कई क्षेत्रों में पवित्रा एकादशी भी कहा जाता है।

श्री पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—
"हे जनार्दन! पौष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है?
कृपया उसका माहात्म्य और व्रत कथा सुनाइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे धर्मराज! यह एकादशी 'पुत्रदा' के नाम से प्रसिद्ध है। इसका व्रत संतान-सुख देने वाला तथा सभी पापों का नाश करने वाला है। अब इसकी पवित्र कथा सुनो।"

प्राचीन समय में भद्रावती नामक नगरी में सुकेतुमान नाम के एक धर्मात्मा राजा राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम शैब्या था। दोनों धर्मपरायण, दानी और भगवान विष्णु के भक्त थे, परंतु उन्हें संतान का सुख प्राप्त नहीं था।

संतान न होने के कारण राजा और रानी अत्यंत दुःखी रहते थे। राजा सोचते थे—

"मेरे बाद मेरा वंश कौन आगे बढ़ाएगा? मेरे पितरों का श्राद्ध और तर्पण कौन करेगा?"

इसी चिंता में एक दिन राजा वन की ओर निकल पड़े। भटकते-भटकते वे एक सुंदर सरोवर के निकट पहुँचे, जहाँ अनेक तेजस्वी ऋषि-मुनि यज्ञ और तप में लीन थे।

राजा ने विनम्रतापूर्वक उन्हें प्रणाम किया। ऋषियों ने राजा के दुःख का कारण पूछा। राजा ने संतान न होने का अपना दुःख बताया।

ऋषियों ने कहा—

"राजन्! आज पौष मास के शुक्ल पक्ष की पवित्र पुत्रदा एकादशी है। यदि आप श्रद्धा और नियमपूर्वक इस एकादशी का व्रत करें तथा भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा करें, तो आपकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी।" राजा सुकेतुमान ने ऋषियों की आज्ञा का पालन किया। उन्होंने पूर्ण श्रद्धा, भक्ति और विधिपूर्वक पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी का व्रत किया, भगवान विष्णु की पूजा की, रात्रि-जागरण किया और द्वादशी के दिन विधिपूर्वक पारण किया।

कुछ समय बाद भगवान श्रीहरि की कृपा से रानी शैब्या ने एक तेजस्वी, गुणवान और धर्मनिष्ठ पुत्र को जन्म दिया। राजा और रानी अत्यंत प्रसन्न हुए तथा उनका वंश आगे बढ़ा। उन्होंने भगवान विष्णु का धन्यवाद किया और जीवनभर धर्मपूर्वक राज्य किया।

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! जो श्रद्धा और नियमपूर्वक पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी का व्रत करता है, उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। उसे संतान-सुख, परिवार में आनंद, यश और अंत में मेरे परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।"

पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी का महत्व

भगवान श्रीविष्णु और माता लक्ष्मी की विशेष पूजा की जाती है। संतान-सुख की कामना करने वाले दंपति इस व्रत को विशेष श्रद्धा से करते हैं।

इस दिन दान, जप, विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा रात्रि-जागरण का विशेष महत्व है।

यह व्रत परिवार की सुख-समृद्धि, वंश-वृद्धि और मानसिक शांति का प्रतीक माना गया है।

कथा का संदेश

भगवान विष्णु की सच्ची भक्ति और श्रद्धा से असंभव प्रतीत होने वाली मनोकामनाएँ भी पूर्ण हो सकती हैं।

धैर्य, विश्वास और धर्म का पालन जीवन में शुभ फल देता है।

व्रत का वास्तविक उद्देश्य आत्मसंयम, सेवा और ईश्वर-भक्ति है।

पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु पौष शुक्ल पक्ष की पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा करता है, उसे सुख-समृद्धि, पारिवारिक कल्याण, संतान-सुख (यदि उसके भाग्य और परिस्थितियों में संभव हो), पितरों का आशीर्वाद तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥